सरसों के प्रमुख रोग एवं उनका निदान

प्रिया सिंह
पादप रोग एवं सूत्रकृमि विभाग, डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर, बिहार

सरसों एक प्रमुख तिलहनी फसल है, जिसमे प्रतिशत तेल पाया जाता है। इसकी खेती मुख्य रूप से राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश एवं गुजरात के राज्यों मे की जाती है जो उत्पादन मे लगभग 87.5 प्रतिशत का योगदान करते है। यह अनेक रोगों जैसे तना गलन, मृदुरोमिल आसिता, चूर्णिल आसिता, सफेद रोली एवं झुलसा या कला धब्बा से आक्रांत होता है, जिससे उत्पादकता मे कमी आती है। पैदावार बढाने के लिए इसके रोगों को नियंत्रित करना अति आवश्यक है।

1. तना गलन – स्क्लेरोटिनिया स्क्लेरोटियोरम

लक्षण

- रोग के लक्षण पौधों के सभी भागों जैसे पत्तियों, तनों और फलियों पर देखे जा सकते है।
- आरंभिक लक्षण पौधों के तनों पर दिखाई देता है। जमीन की सतह से ठीक ऊपर, तने पर पानी से भीगे हुए धब्बे बनते हैं। बाद मे ये धब्बे सफेद रंग के हो जाते है और रुई जैसे कवक वृद्धि से ढक जाते हैं।
- धीरे–धीरे पूरा तना ग्रसित हो जाता है और पौधे सुख कर मुरझा जाते हैं। यदि रोगग्रस्त तने को बीच से फाड़कर देखा जाए तो इसमें काले रंग के गोल या अनियमित आकार के स्क्लेरोटिया दिखाई देते हैं।

प्रबंधन

- रोग प्रतिरोधी किस्मों का प्रयोग करना चाहिए।
- गंभीर रूप से प्रभावित क्षेत्रों के लिए कम से कम पांच साल तक फसल चक्र अपनाना चाहिए।
- स्वस्थ बीजों का प्रयोग करना चाहिए।

2. झुलसा या काला धब्बा रोग – अल्टरनेरिया ब्रेसिकी

लक्षण

- पत्तियों की निचली सतह पर भूरे से काले सकेंद्रिय धब्बे बनते हैं। बाद मे यह धब्बे आकार मे बढ़ जाते है और पत्तियों पर पूरी तरह फैल जाते हैं एवं पत्तियाँ झुलस जाती हैं।
- ये गहरे भूरे धब्बे धीरे–धीरे तनों, टहनियों और फलियों पर भी फैल जाते हैं और ग्रसित फलियाँ सुखकर सिकुड़ जाती है। बीज का आकार छोटा हो जाता है और गहरा भूरा रंग का हो जाता है।

प्रबंधन

- सही समय (10 से 20

अक्टूबर) पर फसल की बुवाई करना चाहिए।

- फसल अवशेष को नष्ट कर देना चाहिए।
- बुवाई के 45 एवं 75 दिनों के बाद मेन्कोजेब (25 ग्राम प्रति लीटर) या आईप्रोडीयान (2.5 ग्राम प्रति लीटर) का दो बार छिडकाव करना चाहिए।
- सिफारिश अनुसार फसल को संतुलित खाद एवं पानी देना चाहिए।

3. सफेद रोली – एल्बुगो कैंडिडा

लक्षण

- पत्तियों की निचली सतह पर सफेद रंग के छोटे – छोटे फफोले बनते है, जो बाद मे आपस मे मिल जाते है और अनियमित आकार ग्रहण कर लेते है।
- पत्तियों के ऊपरी सतह पर, फफोले के ठीक विपरीत पीले दिखाई देते हैं। पूर्ण विकसित होने के बाद, फफोले फट जाते है और बीजाणु हवा मे फैल जाते है और पौधों मे रोग का संचार करते हैं।
- फफोले तने और पत्तियों पर भी विकसित होते है जिसमें फूल बाँझ, विकृत और हरे होते हैं। संक्रमित फूल एक स्टैगहेड (बारहसिंगा) विकसित करते हैं जिसमें फूल बाँझ, विकृत और हरे होते हैं और इसमें बीज नहीं बन पाते हैं।

प्रबंधन

- स्वस्थ एवं प्रमाणित बीजों का प्रयोग करना चाहिए।
- रोग से ग्रसित फसल अवशेष को जलाकर या गाड़कर नष्ट कर देना चाहिए।
- समय से बुवाई (10 से 25 अक्टूबर) करना चाहिए।
- मेटालेग्जिल (6 ग्राम प्रति किलोग्राम) से बीज उपचारित करना चाहिए।
- रोग के लक्षण आने पर, बुवाई के 40 दिन के बाद से रिडोमिल या मेन्कोजेब (2.5 ग्राम प्रति लीटर) का 15 से 20 दिन के अंतराल पर तीन बार छिडकाव करना चाहिए।

4. चूर्णिल आसिता – ईरीसाईफी क्रुसीफेरम

लक्षण

- यह रोग निचली पत्तियों के दोनों सतहों पर मटमैले सफेद रंग के धब्बों के रूप में प्रकट होता है।
- यह धब्बे बाद इ पौधों के तनों और फलियों पर भी बनते हैं। अनुकूल वातावरण मे यह धब्बे धीरे–धीरे बढ़ते हैं और सम्पूर्ण पत्ती को ढक देते हैं।
- ग्रसित पौधों की वृद्धि रुक जाती है और वे बौने रह जाते हैं एवं उन पर फलियाँ भी कम बनती है।
- बीज छोटे हो जाते है और सिकुड़ जाते हैं एवं केवल फलियों के निचले भाग मे ही बनते है जबकि ऊपर का हिस्सा खाली रहता है।

प्रबंधन

- समय पर फसल की बुवाई करना चाहिए।
- फसल अवशेष को जलाकर या गाड़कर नष्ट कर देना चाहिए।
- रोग के आने पर, घुलनशील गंधक (2 ग्राम प्रति किलोग्राम) या डाईनोकैप (1 ग्राम प्रति किलोग्राम) का 15 दिनों के अंतराल पर छिडकाव करना चाहिए।